International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 27-03-2019; Accepted: 29-04-2019
www.educationjournal.in
Volume 4; Issue 3; May 2019; Page No. 46-47

पर्यावरण शिक्षाः क्या और क्यों

डॉ. मुकेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, एल.एन.टी. शिक्षण महाविद्यालय पानीपत, हरियाणा, भारत

सारांश
आज सम्पूर्ण विश्व के सामने पर्यावरण प्रदूषण की गंभीर समस्या है। आज प्रत्येक प्रकार का प्रदूषण अपनी चरम सीमा पर है। पर्यावरण के प्रति सजगता, जागरुकता एवं सजगता का विकास करने में शिक्षा और विशेषकर पर्यावरण शिक्षा का विशेष महत्त्व है। विश्व समुदाय को पर्यावरण, उसके महत्त्व तथा समस्याओं के संबंध में ज्ञान, अवरोध, कौशल, रुचियों तथा अभिवृत्तियों का विकास करने की प्रक्रिया ही पर्यावरण शिक्षा है।
आज पर्यावरण प्रदूषण विश्वव्यापी समस्या बन चुका है, पर्यावरण में गुणवत्ता एवं संतुलन बनाये रखने के लिए सभी राष्ट्र चिंतित हैं। इसके सुधार के लिए पर्यावरण–शिक्षा का सूत्रपात हुआ है जो एक नई दृष्टि है इसलिए पर्यावरण शिक्षा आज की प्राथमिक आवश्यकता है।

मूल शब्दः विश्वव्यापी, पर्यावरण–शिक्षा, पर्यावरण प्रदूषण, अभिवृत्तियों

प्रस्तावना
हम जानते हैं कि आज सम्पूर्ण विश्व के सामने पर्यावरण प्रदूषण की गंभीर समस्या है। आज प्रत्येक प्रकार का प्रदूषण अपनी चरम सीमा पर है। इस प्रदूषण पर व्यंग्य करते हुए कहा जा सकता है कि आज हम पेट्रोल खाते हैं (रासायनिक उर्वरको से उत्पन्न अनाज के रूप में उल्लेखनीय है कि रासायनिक उर्वरकों में पेट्रोल पदार्थों का उपयोग होता है), पेट्रोल पहनते हैं (सिन्थेटिक वस्त्रों के निर्माण में पेट्रोल काम आता है) तथा पेट्रोल की साँस लेते हैं (यातायात वाहनों का धुआँ वायु में मिलने से यह हमारी श्वसन क्रिया में जाता है)। आज रासायनिक उर्वरकों के विरुद्ध आवाज उठ रही है, यातायात के साधनों के प्रति आक्रोश है। इसी प्रकार दूसरे प्रदूषण क्षेत्रों के प्रति भी सजगता आयी है, किंतु यह सजगता कितने लोगो में है? अध्ययन किया जाये तो पायेंगे कि आज विश्व की जनसंख्या का मात्र 5ः व्यक्ति ही पर्यावरण के प्रति सजग है। पर्यावरण की सुरक्षा, संरक्षण तथा सुरक्षा के प्रति जनसंख्या की सजगता बढ़ानी होगी, क्योंकि पर्यावरण का तीव्रता के साथ होता जा रहा विघटन सम्पूर्ण वनस्पति जगत तथा प्राणी जगत के अस्तित्व के लिए अत्यंत ही हानिप्रद है और हम यह भी अध्ययन कर चुके हैं कि अकेले सरकारी प्रयास तथा कानून इस दिशा में विशेष कुछ नहीं कर सकते हैं।
पर्यावरण के प्रति सजगता, जागरुकता एवं उसके साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए शिक्षा सर्वोत्तम साधन है। पर्यावरण के प्रति सजगता, जागरुकता एवं सजगता का विकास करने में शिक्षा और विशेषकर पर्यावरण शिक्षा का विशेष महत्त्व है। प्रस्तुत अध्ययन में हम पर्यावरण शिक्षा के अर्थ, महत्त्व तथा उससे संबंधित अन्य पहलुओं के संबंध में अध्ययन करने जा रहे हैं।

पर्यावरण शिक्षा का अर्थ
पर्यावरण अत्यंत ही व्यापक प्रत्यय है। इसमें हम उन समस्त बाह्य शक्तियों, प्रभावों तथा परिस्थितियों को सम्मिलित करते हैं जो शुक्र–कण को छोड़कर प्रत्येक जीवधारी के जीवन, व्यवहार, अभिवृद्धि, विकास तथा परिपक्वता को प्रभावित करते हैं। जीवधारी के चारों ओर कौन–कौन सी ऐसी शक्तियाँ हैं, जो उसके जीवन व्यवहार, विकास आदि को प्रभावित करती हैं, वे किस प्रकार प्रभावित करती हैं, क्यों प्रभावित करती है, इन शक्तियों का हमारे लिए क्या महत्त्व है, इनकी सुरक्षा व संरक्षा कैसे की जाये आदि तथ्यों से संबन्धित शिक्षा ही पर्यावरण शिक्षा कहलाती है।
नेहरू फाउण्डेशन फॉर डेवलपमेण्ट, अहमदाबाद के सेण्टर फॉर एनवायर्नमेण्ट एजूकेशन ने पर्यावरण शिक्षा को कुछ इस प्रकार परिभाषित किया है – "पर्यावरणीय शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य विश्व में ऐसी जनसंख्या का विकास करना है जो सम्पूर्ण पर्यावरण, उसकी समस्याओं के प्रति सजग हो एवं उससे संबंध रखती हो तथा जो सामूहिक रूप से इसका ज्ञान रखे, अभिवृत्तियाँ रखे, अभिप्रेरणा रखे तथा इनके उन्नयन हेतु व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से कार्य कर इससे संबंधित समस्याओं के समाधान तथा नई समस्याओं को उत्पन्न होने से रोकने के प्रयास करे।"
वास्तव में, पर्यावरणीय शिक्षा पर्यावरण के प्रति चेतना जागृत करने, भावनाएँ तथा अभिवृत्तियाँ विकसित करने की प्रक्रिया है, जिससे व्यक्ति वैयक्तिक तथा सामूहिक रूप से पर्यावरण की सुरक्षा, संरक्षा तथा संरक्षण का कार्य कर सके, इस संबंध में आयी या आने वाली समस्याओं का समाधान कर सके। इससे पर्यावरण प्रदूषण को रोकने, नियन्त्रित करने तथा सुधारने का कार्य स्वतः ही सम्मिलित हो जाता है।
यूनेस्को ने सन् 1970 में पर्यावरण शिक्षा की परिभाषा देते हुए लिखा है कि – "पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य पर्यावरण के विभिन्न तत्त्वों (सांस्कृतिक, भौतिक एवं जैविक) के पारस्परिक संबंधों एवं अंतःनिर्धारताओं को समझने का प्रयास करता है। इसमें पर्यावरण की गुणवत्ता से संबन्धित समस्याओं एवं मुद्दों पर निर्णय लेने और अपने कार्यों एवं व्यवहारों को निर्मित करने का अभ्यास भी सन्निहित है।"
1993 में पर्यावरण शिक्षा की परिभाषा देते हुए प्रो. मिश्रा ने लिखा है कि – "पर्यावरण शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे मनुष्य में पर्यावरण के प्रति जागरूकता, ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियों तथा मूल्यों को विकसित किया जा सकता है। इससे पर्यावरण में वांछित सुधार भी लाया जा सकता है।"
संक्षेप में हम कह सकते हैं कि विश्व समुदाय को पर्यावरण, उसके महत्त्व तथा समस्याओं के सम्बन्ध में ज्ञान, अवबोध, कौशल, रुचियों तथा अभिवृत्तियों का विकास करने की प्रक्रिया ही पर्यावरण शिक्षा है।

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता

आज सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण की समस्या है। हमारे चारों ओर का पर्यावरण तथा पर्यावरण के सभी घटक आपत्तिजनक स्थिति तक प्रदूषित हो चुके हैं। वायु, जल तथा मृदा प्रदूषित हैं। वनों की मात्रा काफी कम हो गयी है। वन्य जीवों की अनेक प्रजातियाँ विलुप्त हो गयी हैं और अनेक विलुप्त होने वाली हैं। ओजोन परत पर दबाव बढ़ गया है। अम्लीय वर्षा की प्रायः दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। हरित गृह प्रभावों के प्रति हम चिन्तित हैं। जनसंख्या वृद्धि तथा औद्योगीकरण के कारण आज हमारे सामने प्राणवायु की कमी की भयंकर समस्या है। जलाभाव, कूड़े–कचरे से निपटने की समस्या जैसी अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ आज हमारे सामने हैं। इन समस्याओं का समाधान अकेले न तो कोई सरकार कर सकती है और न ही कोई गैर–सरकारी स्वयंसेवी संस्था का संगठन। इन समस्याओं से निपटने के लिए प्रत्येक नागरिक को आगे आना होगा। प्रत्येक नागरिक की इस दिशा में भागीदारी आवश्यक व अनिवार्य है। यह तभी संभव है जब प्रत्येक नागरिक पर्यावरण से सम्बन्धित इन समस्याओं, पर्यावरण के महत्त्व, उसके प्रदूषण से हानियाँ तथा पर्यावरण की सुरक्षा, संरक्षण एवं संरक्षा के उपायों तथा विधियों से अवगत हो, उनके प्रति सजग हो तथा अपने कार्य व व्यवहार इस दिशा में सम्पन्न करे। इस प्रकार की सजगता तथा भावना नागरिकों में केवल मात्र शिक्षा के द्वारा ही विकसित की जा सकती है। अतः पर्यावरणीय शिक्षा की आज नितान्त आवश्यकता है।

पर्यावरण शिक्षा का महत्त्व

जनसंख्या में हो रही बेतहाशा वृद्धि, तीव्रता के साथ हो रहा औद्योगिक विकास, वन कटाव, यातायात, वाहनों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि और जनसाधारण की अज्ञानता व अशिक्षा के कारण आज पर्यावरण शिक्षा का महत्त्व बढ़ता ही जा रहा है। पर्यावरण शिक्षा के बढ़ते हुए महत्त्व को हम नीचे लिखे बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं –

1. जनसाधारण में बढ़ती हुई निरक्षरता तथा अज्ञानता के कारण पर्यावरण सुरक्षा व संरक्षण के उपायों का पूरा–पूरा प्रयोग नहीं हो पा रहा है। अज्ञान व अशिक्षा से ग्रसित व्यक्ति पर्यावरण की सुरक्षा नहीं कर सकता है।
2. पर्यावरण सुरक्षा के लिए जनसंख्या नियंत्रण भी आवश्यक है। जनसंख्या नियन्त्रण को कैसे रोका जाये यह पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में आता है।
3. वर्तमान में प्रत्येक देश में तीव्र गति से औद्योगीकरण हो रहा है, इससे पर्यावरण प्रदूषण की सम्भावनाएँ भी बढ़ी हैं। इनसे उत्पन्न प्रदूषण को रोकने व उसे नियन्त्रित करने के लिए पर्यावरण शिक्षा जरूरी है।
4. बढ़ते शहरीकरण तथा नगरों के आकार ने व्यक्तियों को प्रकृति से दूर कर दिया है। प्रकृति के जैविक एवं अजैविक तत्त्वों को समान प्रकृति के निकट जाने के लिए पर्यावरण शिक्षा आवश्यक है।
5. बढ़ते यातायात के साधनों से प्रदूषण का खतरा पर्याप्त मात्रा में बढ़ गया है। वाहन प्रदूषण को रोकने के लिए पर्यावरण शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण साधन है।
6. पर्यावरण शिक्षा हमारी संस्कृति की रक्षा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अपना सकती है। अहिंसा, जीव–दया, प्रकृति–पूजन आदि हमारी संस्कृति के मूलाधार हैं। पर्यावरण शिक्षा में इन तथ्यों की यथेष्ट मात्रा में शिक्षा दी जाती है।
7. पर्यावरण शिक्षा हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पाठ पढ़ाती है।
8. वनों का, वृक्षों का तथा पहाड़, नदी–नाले आदि का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? यह जानने के लिए पर्यावरण शिक्षा अनिवार्य है।
9. बढ़ते हुए पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जनसाधारण के क्या कर्त्तव्य व दायित्व हैं, इसका हमें पर्यावरण शिक्षा ही ज्ञान करा सकती है।
10. पर्यावरण प्रदूषण के बढ़ने से उत्पन्न खतरों तथा उनसे बचने के उपायों की जानकारी हमें पर्यावरण शिक्षा ही दे सकती है।
11. पर्यावरण के प्रति चेतना जाग्रत करने, उसके प्रति सकारात्मक अभिवृत्तियों तथा भावनाओं का विकास करने में पर्यावरण शिक्षा की महती भूमिका है।
12. पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण से संबंधित समस्याओं को जानने, उनका विश्लेषण करने तथा उनका समाधान खोजने में हमारी सहायता करती है।

निष्कर्ष

पर्यावरण प्रदूषण आज विश्वव्यापी समस्या बन चुका है, पर्यावरण में गुणवत्ता एवं संतुलन बनाये रखने के लिए सभी राष्ट्र चिंतित हैं। इसके सुधार के लिए पर्यावरण–शिक्षा का सूत्रपात हुआ है जो एक नई दृष्टि है इसलिए पर्यावरण–शिक्षा आज की प्राथमिक आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. शर्मा, आर.ए., पर्यावरणीय शिक्षा, पृ. 17
2. शर्मा एवं सक्सेना, पर्यावरणीय शिक्षा, पृ. 64
3. शर्मा, रामाधार, पर्यावरण विज्ञान : एक अध्ययन, पृ. 13
4. त्रिपाठी, डॉ. दयाशंकर, पर्यावरण अध्ययन, पृ. 73
5. मौर्य, एस.डी., संसाधन एवं पर्यावरण, पृ. 19